६३२ ववाणिया, श्रावण वदी १४, सोम, १९५१

'बाल्यावस्थाकी अपेक्षा युवावस्थामें इंद्रियविकार विशेषरूपसे उत्पन्न होता है, उसका क्या कारण होना चाहिये ?' ऐसा जो लिखा उसके लिये संक्षेपमें इस प्रकार विचारणीय है–

ज्यों ज्यों क्रमसे अवस्था बढ़ती है त्यों त्यों इंद्रियबल बढ़ता है, तथा उस बलको विकारके हेतुभूत निमित्त मिलते हैं; और पूर्वभवके वैसे विकारके संस्कार रहते आये हैं, इसलिये वह निमित्त आदि योग पाकर विशेष परिणामको प्राप्त होता है। जैसे बीज है वह तथारूप कारण पाकर क्रमसे वृक्षाकारमें परिणमित होता है वैसे पूर्वके बीजभूत संस्कार क्रमसे विशेषाकारमें परिणमित होते हैं।